दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001

(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)

सम्बद्ध

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : digvijayans@gmail.com
: dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

पत्रांक : /2019–20 दिनांक : 22.01.2020

प्रकाशनार्थ

आज दिनांक 22 जनवरी 2020 को महात्मा गॉधी के 150वीं स्वर्णजयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य महाविद्यालय में राजनीति विज्ञान विभाग के तत्वावधान में '21वीं सदी में गॉधी दर्शन की प्रासंगिकता' विषय पर एक दिवसीय संगोष्ठी के उद्घाटन अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए डॉ. महेन्द्र सिंह, सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग, दी.उ.उ. गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर ने कहा कि वर्तमान संदर्भ में गॉधी न केवल भारत बल्कि वैश्विक स्तर पर महामानव के रूप में प्रतिष्ठित हैं, जिनके आदर्श, विचार, जीवनमूल्य और दर्शन को सम्पूर्ण विश्व ने स्वीकार किया। गॉधी ने अपने जीवन में सत्य, अहिंसा को तो आधार माना ही साथ ही अपरिग्रह के सिद्धान्त को भी नैतिक जीवन का एक हिस्सा माना। गॉधी जी की विशेषता यह थी कि वह किसी भी कार्य को करने से पहले उसे स्वयं पर प्रयोग करते थे और उनके इस विचार में किसी प्रकार का दुराग्रह नहीं होता था।

विशिष्ट वक्ता के रूप में बोलते हुए डॉ. विवेक शुक्ला, सहायक आचार्य, सी.आर.डी. पी.जी. कालेज, गोरखपुर ने कहा कि सामाजिक समरसता तथा मानवीय एकता के लिए इन्होने विशेष आन्दोलन चलाया और अहिंसा को एक ऐसा अस्त्र माना जिसके बल पर शक्तिशाली ताकतो का भी झुकाया जा सकता है। वर्तमान राजनीति मूल्यविहीन होती जा रही है, जिसके लिए आवश्यक है, हम राजनीति को सामाजिक कल्याण की भावना से प्रेरित होकर एक समावेशी विकास की दृष्टि से अपनायें।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष डॉ. वीणा गोपाल मिश्रा ने कहा कि आज के परिवेश में मानवता इस मोड़ पर आ गयी है, मानव अपने नैतिक मूल्यो को भुलता जा रहा है और आर्थिक मूल्य उसपर प्रभावी होता जा रहा है। भौतिकवाद अपने चरम पर है, जिसके कारण हम अपनी संस्कृति और विरासत को भी भूलते जा रहे हैं। अतः आवश्यक है कि हम गॉधीवाद के विचारों को अपनायें तथा स्वराज्य, सर्वोदय तथा अन्तोदय को अपनाकर राम राज्य की परिकल्पना को साकार करें। क्योंकि वही यह घड़ी है जब हम कर्मयोगी महात्मा गॉधी को एक सुंदर विकल्प के रूप में प्रस्तुत कर सकते हैं। हिन्द स्वराज, महात्मा गॉधी का एक ऐसा मूल मंत्र है जिसमें

दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001

(नैक प्रत्यायित 'B' श्रेणी)

सम्बद्ध

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : digvijayans@gmail.com
: dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

आधुनिक विश्व की सभी समस्याओं का समाधान निहित है। अतः गॉधी का राष्ट्र धर्म ही सही अर्थों में मानवधर्म था तथा यही जीवन दर्शन का संदेश देता है और इसी आदर्श को गॉधी को कालजयी व्यक्तित्व के रूप में स्थापित किया। ऐसे विश्वपुरूषों के दर्शन शदी नहीं बल्कि युग–युगान्तर तक प्रासंगिक बने रहते हैं। यही अर्थो में गॉधी एक व्यक्ति नहीं बल्कि विचार थे और विचार सदा अमर होते हैं।

संगोष्ठी के तकनीकि सत्र की अध्यक्षता करते हुए डॉ. अमित कुमार उपाध्याय सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग ने कहा कि गॉधी की अहिंसा नीति का आशय था स्वयं को कष्ठ में रखकर, दूसरों को सुख पहुचाना। इन्होने पुनः कहा हम कभी भी गॉधी की उपेक्षा नहीं कर सकते। यदि हम अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवता के समूल विनाश को रोकना चाहते हैं तो इसके लिए सिर्फ गॉधी के बताया हुआ मार्ग ही एक मात्र विकल्प दिखाई देता है। इन्होने यह भी माना कि गॉधी मूल रूप से एक आध्यात्मिक व्यक्ति थे तथा राजनीति का आध्यात्मिकरण व धार्मिक सहिष्णुता का संदेश दिया।

तकनीकि सत्र में लगभग 16 प्रतिभागियों ने अपना सारगर्भित शोध–पत्र प्रस्तुत किया जिसमें सुनील कुमार मिश्रा, प्रियंका त्रिपाठी, शुभेन्द्र सत्यदेव, रचना कुशवाहा, राजू प्रजापति, कीर्ति द्विवेदी, जितेन्द्र प्रजापति, रिपून्जय मिश्रा मुख्य थे।

कार्यक्रम के प्रारंभ में संगोष्ठी की प्रस्ताविकी डॉ. शैलेश कुमार सिंह ने, संचालन एम.ए. प्रथम वर्ष की छात्रा कीर्ति द्विवेदी ने तथा अंत में महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. शैलेन्द्र प्रताप सिंह ने सभी प्रतिभागियों और आयोजको का धन्यवाद और शुभकामना व्यक्त करते हुए आभार ज्ञापित किया।

संगोष्ठी में विश्वविद्यालय तथा महाविद्यालयों से आये हुए पचास से अधिक प्रतिभागियों सहित महाविद्यालय के डॉ. रविन्द्र कुमार गंगवार, श्रीमती निधि राय, श्रीमती जागृति विश्वकर्मा, श्री अवधेश शुक्ल, डॉ. रूक्मिणी चौधरी, डॉ. अखण्ड प्रताप सिंह, डॉ. सुनील कुमार सिंह सहित अन्य शिक्षक और छात्र उपस्थित थे।

डॉ. (मुरली मनोहर तिवारी
सूचना एवं जनसम्पर्क प्रभारी